भाग्य एवं पुरुषार्थ

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जन्म–जन्मान्तर में किया गया कर्म जिसका फल वर्तमान जीवन में नहीं प्राप्त हुआ रहता वह कर्म भाग्य का निर्धारण करता है। भाग्य एवं पुरुषार्थ एक सिक्के के दो पहलू हैं। जीवन में भाग्य और पुरुषार्थ का बराबर महत्व है। कभी–कभी हम बहुत परिश्रम करते हैं किन्तु अनुकूल परिणाम नहीं मिलता। तब हमें यह मानना पड़ता है कि यह हमारे भाग्य में नहीं था। कभी–कभी अल्प परिश्रम में अधिक उपलब्धि मिल जाती है तब हम कहते हैं कि यह हमारे भाग्य में लिखा था। भाग्य का नियामक मनुष्य नहीं है। मनुष्य केवल कर्म कर सकता है। फल पाना उसके अधीन नहीं है। समय आने पर फल प्राप्त होता है। वर्तमान जीवन के पुरुषार्थ को करते हैं और देखते हैं किन्तु पूर्व जन्म को हम नहीं जानते। परिणाम के द्वारा हम यह अनुमान करते हैं कि पूर्वजन्म में अच्छा काम किया था या बुरा।

पूर्व जन्म के अच्छे कर्मों के परिणपाम स्वरूप इस जन्म में सुख और बुरे कर्मों के परिणाम स्वरूप दुःख भोगने पड़ते हैं। कुछ लोग पुरुषार्थ को महत्व देते हैं और कहते हैं कि पुरुषार्थ करके मैंने धन कमाया है। हमारी भौतिक समृद्धि पुरुषार्थ का परिणाम है। किन्तु ऐसी बात नहीं है। यह भी पूर्वजन्म के अच्छे कर्मों का परिणाम है। पुरुषार्थ केवल निमित्त है। सब कुछ पूर्व निर्धारित है।

पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध बनता है। यदि हम पुरुषार्थ न करें तो प्रारब्ध कैसे बनेगा? सोये हुए सिंह के मुख में मृग अपने आप प्रवेश नहीं कर जाता। उसको पकड़ने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। कुछ लोग भाग्य को मानते है कुछ लोग पुरुषार्थ को। पुरुषार्थ के बिना भाग्य नहीं बनता। जो हम इस जन्म में कर रहे है चाहे वह अच्छा कर्म है या बुरा इनमें से कुछ कर्मों का फल तो हमें इसी जन्म में प्राप्त हो जाता है और कुछ कर्म प्रारब्ध बन करके अगले जन्म में प्राप्त होते है। भाग्य और पुरुषार्थ का खेल यही से प्रारंभ हो जाता है।

इस संसार में कुछ लोग भाग्यवादी है और कुछ लोग पुरुषार्थवादी। भाग्यवादी भाग्य को ही मानकर चलते है ओर कहते है कि जो कुछ भाग्य में लिखा है वही सब होकर रहेगा। पुरुषार्थवादी कहते है कि पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य को बदला जा सकता है। भाग्य के भरोसे बेठे रहने से कार्य नहीं होता। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते है जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती है अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते है। हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती है, वे स्वयं की कमियों को देखने के बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते है जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते है। वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है।

पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है। कुछ लोग ऐसे होते है जो भाग्य भरोसे बैठे रहते है। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते है और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते है। ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं की कमियों को खोजने तथा उनको ढूंढ़ने के बजाय अपने भाग्य को दोष देते है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म का मार्ग पुरुषार्थ का मार्ग है। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अडिग रहना चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करता है। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज अथवा देश को गौरवान्वित करता है। भाग्य हमारे कर्मों का फल है कोई ईश्वर इच्छित वस्तु नहीं। हम नित्य प्रति कुछ न कुछ क्रिया करते है और उसका परिणाम भी हमें मिलता है। यही परिणाम ही हमारा भाग्य होता है।

ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए दी है कि वह अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करें। यदि सबकुछ पूर्वनिर्धारित ही होता तो बुद्धि और चेतना की क्या आवश्यकता थी। फिर उसकी विचार शक्ति, क्रियाशीलता और पुरुषार्थ की आवश्यकता और

उपयोगिता ही क्या रह जाती। पुनः हम यह देखते हैं कि इस संसार में कोई दुःखी है, कोई सुखी है, कोई धनवान है, कोई दरिद्र और कोई बुद्धिमान और कोई मूर्ख। यदि यह कहा जाये कि यह सब ईश्वर की देन है या ईश्वर ने किसी के भाग्य में अच्छा लिखा है और किसी के भाग्य में बुरा तो यह भी ठीक नहीं है। ईश्वर तो सच्चा न्यायी है। वह ऐसा न्याय कर ही नहीं सकता। ईश्वर तो न्यायपूर्वक सभी को एक दृष्टि से देखता है। वह न किसी को नीचा समझता है न किसी को ऊँचा। उसके लिए सब समान है। ईश्वर सभी को बराबर शक्ति और सम्पत्ति देता है तो कोई साधन सम्पन्न और कोई साधनहीन क्यों हो जाता है? हमें जानना चाहिए कि ईश्वर की दृष्टि में सभी समान है। लेकिन कोई अपनी शक्ति का सदुपयोग करता है तो कोई दुरूपयोग। जो सदुपयोग करता है वह उन्नति करता है और उसका विकास होता है। इस प्रकार प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों का जीवन में महत्व है। जीवन में भाग्य और पुरुषार्थ दोनों का महत्व है।